Swadeshi Research Foundation A Monthly Journal of Multidisciplinary Research
International Peer Reviewed, Refereed, Indexing & Impact Factor - 5.2, Ex- UGC S.N. 4990
ISSN : 2394-3580, Vol. - 8, No. - 10, August - 2021, Conference Special Issues
2021

श्री मेरूतुंगाचार्यरचित प्रबन्धचिन्तामणि (भोज कालीन इतिहास का प्रमुख स्त्रोत)

प्रोफेसर नवीन गिडियन
अध्यक्ष–इतिहास विभाग, शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर, उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

मेरूतुंग[1] के अनुसार वाक्पति के तुरंत बाद भोज मालवा के सिंहासन पर आरूढ़ हुआ। भोज के जन्म के तुरंत पश्चात् उसकी जन्म–पत्री खींची गई जिससे पता चला कि उसके भाग्य में लिखा है कि वह दक्षिणापथ और गौड़ पर पचपन वर्ष सात महीने और तीन दिन राज्य करेगा। इससे वाक्पति अपने निजी पुत्र के शान्तिपूर्ण उत्तराधिकार के प्रश्न पर गम्भीरता पूर्वक विचार करने लगा और कहा जाता है कि बाद को उसने आज्ञा दी कि भोज का बध कर दिया जाय। राजाज्ञा पालनार्थ वह राजकुमार किसी निश्चित स्थान पर ले जाया गया तब नियुक्त अधिकारियों ने उससे कोई इष्टदेव को अपने को समर्पण कर मृत्यु के लिए प्रस्तुत होने का अनुरोध किया। किन्तु उसने निम्नलिखित पद राजा के पास भेजने मात्र की प्रार्थना की[2] –

"सत्ययुग का अलंकार स्वरूप वह राजा मान्धाता चला गया। रावण का शत्रु वह रामचन्द्र आज कहाँ है जिसने महासागर पर सेतु बाँधा था ? और फिर आप के समय तक युधिष्ठिर आदि जो अनेक राजा हुए हैं वे सब चले गए, पर यह पृथ्वी किसी के साथ नहीं गई। पर मैं समझता हूँ तुम्हारे साथ तो जाएगी।"

उन्होंने उपर्युक्त पद्य को राजा के पास भेज दिया। उसको पढ़कर राजा को अपने पर क्षोभ हुआ और उसने राजकुमार को तुरंत वापस लाने की आज्ञा दी और बड़े स्नेह से स्वागत कर गौरवास्पद युवराज पद प्रदान किया।

यही कहानी किंचित परिवर्तनों के साथ 'आईने–अकबरी'[3] में दोहराई गई है। इसमें यह लिखा है कि भोज के जन्म के बाद एक अशुद्ध जन्मपत्री के कारण उसके सम्बन्धियों ने उसको त्याग दिया और मारने के लिए अरक्षित छोड़ दिया। किन्तु अति ही शीघ्र भूल का पता लगने पर बालक को पुनः उनका स्नेह–भाजन हुआ।

अनेक सामयिक प्रलेखों में लिखा है कि वाक्पति के बाद उसके छोटे भाई सिंधुराज को उत्तराधिकार मिला और सिंधुराज के बाद उसका पुत्र भोज राजा हुआ। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए उपर्युक्त कहानी पूर्णरूपेण अर्थहीन है।

भोज के शासनकाल के नीचे 12 अभिलेखों[4] का अब तक पता चला है –

(1) बाँसवाड़ा का ताम्रपत्र अभिलेख संवत् 1076=1020 ई. स.
(2) बेटमा का ताम्रपत्र अभिलेख संवत् 1076=1020 ई. स.
(3) उज्जैन का भोजदेव का ताम्रपत्र अभिलेख संवत् 1078=1021 ई. स.
(4) भोजदेव निर्मित वाग्देवीमूर्ति अभिलेख संवत् 1084=1028 ई.
(5) तिलकवाड़ा का भोजदेव कालीन ताम्रपत्र अभिलेख संवत् 1091=1034 ई.
(6) कालवन का भोजदेव कालीन यशोवर्मन् का ताम्रपत्र अभिलेख (तिथि रहित)
(7) मोड़ासा का भोजदेव कालीन ताम्रपत्र अभिलेख संवत् 1067=1011 ई.
(8) महुड़ी का भोजदेव का ताम्रपत्र अभिलेख संवत् 1074=1018 ई.
(9) भोजदेव का पिपलदा (कम्पेल–इंदौर) ताम्रलेख संवत् 1079=1022 ई.
(10) देपालपुर का भोजदेव का ताम्रपत्र अभिलेख संवत् 1079=1023 ई.
(11) शेरगढ़ का सोमनाथ मंदिर प्रस्तर अभिलेख संवत् 1084=1028 ई.
(12) भोजपुर का भोजदेव कालीन प्रस्तर जैन प्रतिमा अभिलेख (तिथि रहित)

श्री मेरूतुंगाचार्य :– मेरुतुंग 14वीं शताब्दी के एक भारतीय लेखक थे। ये एक प्रसिद्ध जैन विद्वान् थे, जो बाँधवाँ (काठियावाड़, गुजरात) के रहने वाले थे।

- प्रबन्ध चिन्तामणि जो कि जैन साहित्य का एक महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है, इसकी रचना मेरुतुंगाचार्य ने ही की थी।
- अनुमान किया जाता है कि प्रबन्ध चिन्तामणि की रचना मेरुतुंगाचार्य ने 1305 ई. अथवा संवत 1361 में की थी।

- यह एक ऐतिहासिक महत्त्व की गद्य रचना है जिसमें इतिहास–प्रसिद्ध विद्वानों, कवियों और आचार्यों से सम्बद्ध घटनाओं का अलंकृत गद्यशैली में वर्णन किया गया है।
- गुजरात के प्राचीन ऐतिहासिक साहित्यिक साधनों मे यह ग्रन्थ सबसे अधिक उपयोगी सिद्ध हुआ है। इसमें वनराज द्वारा पाटण की स्थापना से लेकर वस्तुपाल द्वारा संघटित यात्राओं का वर्णन है। प्रबन्धचिन्तामणि में अपने समय की प्रचलित लगभग सभी कथाओं का परिचय मिलता है।
- प्रबन्ध चिन्तामणि ऐतिहासिक ग्रंथ है, जो पांच खण्डों में विभाजित है। इन खण्डों से क्रमशः विक्रमांक, सातवाहन मूलराज, मुंज, नृपति भोज, सिद्धराज जयसिंह, कुमार पाल, लक्ष्मण सेन, जयचन्द्र आदि के विषय में जानकारी मिलती है।
- कहा जाता है कि आचार्य मेरुतुंग ने एक भोजप्रबंध भी लिखा था, जो आज उपलब्ध नहीं है। इतना अवश्य है कि मेरुतुंग के प्रबन्ध चिन्तामणि में भोज कथाएँ हैं।
- मेरुतुंग द्वारा रचित अन्य ग्रन्थ विचार श्रेणी है जिसमें सुरिगण की पट्टावली के साथ–साथ चावडा, सोलंकी और बघेल वंश के नृपतियों का तिथिक्रम भी दिया गया है।

प्रबन्धचिन्तामणि का महत्व :– गुजरात के प्राचीन इतिहास की विशिष्ट श्रुति और स्मृति के आधारभूत जितने भी प्रबन्धात्मक और चरित्रात्मक ग्रन्थ–निबन्ध इत्यादि प्राकृत, संस्कृत या प्राचीन देशी भाषा में रचे हुए उपलब्ध होते हैं, उन सबमें इस प्रबन्धचिन्तामणि का स्थान सबसे विशिष्ट और अधिक महत्व का है।

उस प्राचीन समय से ही जब से इसकी रचना हुई है तब से ही इस ग्रन्थ की प्रतिष्ठा विद्वानों में खूब अच्छी तरह हो गई थी और जिनको कुछ ऐतिहासिक वृत्तान्तों के जानने की उत्कण्ठा होती थी वे प्रायः इसका वाचन और अध्ययन किया करते थे। पिछले कई ग्रन्थकारों ने इस ग्रन्थ का अपनी रचनाओं में अच्छा उपयोग भी किया है और आदरपूर्वक इसका उल्लेख भी किया है। इन ग्रन्थकारों में, सबसे पहले शायद जिनप्रभ सूरि हैं जो प्रायः इनके समकालीन थे। यद्यपि उन्होंने इनका कहीं नामोल्लेख नहीं किया है तथापि अपने महत्व के ग्रन्थ, विविधतीर्थकल्प में इस ग्रन्थ का सर्वप्रथम उपयोग किया है। इसके बाद, इन जिनप्रभ सूरि के उत्तरावस्था के समकालीन और इन्हीं के पास कुछ गहन शास्त्रों का अध्ययन भी करने वाले मलधारी राजशेखर सूरि ने, अपने प्रबन्धकोष में, इस ग्रन्थ का उपयोग किया है। राजशेखर सूरि ने तो प्रकट रूप से इस ग्रन्थ का नामोल्लेख भी किया है। हेमचन्द्र सूरि के वृत्तान्त में उन्होंने कहा है कि 'इन आचार्य के जीवन के सम्बन्ध में जो जो बातें प्रबन्धचिन्तामणि ग्रन्थ में लिखी गई हैं, उनका वर्णन हम यहाँ पर नहीं करना चाहते। ऐसा करना चर्वित–चर्वण मात्र होगा' इत्यादि। संवत् 1422 में समाप्त होने वाले जयसिंह–सूरि–रचित कुमारपालचरित में तथा संवत् 1464 के पूर्व में लिखे गये कुमारपालप्रबोधप्रबन्ध में और संवत् 1492 में संकलित, जिनमण्डनोपाध्याय के कुमारपालप्रबन्ध में इस ग्रन्थ का खूब उपयोग किया गया है। संवत 1497 में परिपूर्ण होने वाले जिनहर्षगणीकृत वस्तुपालचरित्र में भी इसका यथेष्ट आधार लिया गया है। संवत 1500 के बाद, प्रायः 10–15 वर्ष के बीच में जिसकी रचना हुई जान पड़ती है, उस उपदेशतरंगिणी नामक ग्रन्थ में तो इस ग्रन्थ में से प्रायः सैंकड़ों ही पद्य उद्धृत किये गये हैं और इसके अनेक प्रबधों का बहुत कुछ सार लिया गया है। एक जगह तो ग्रन्थकार ने इसका प्रकट नामनिर्देश भी कर दिया है और लिख दिया है कि – 'सर्वेऽपि प्रबन्धाः प्रबन्धचिन्तामणितो ज्ञेयाः।' (बनारस आवृत्ति, पृ. 58)। इसके बाद के श्राद्धविधि, उपदेशसप्तविका आदि 16वीं शताब्दी में बने हुए ग्रन्थों में, उनके कर्ताओं ने भी अपने–अपने ग्रन्थों में इस ग्रन्थ का जहाँ–तहाँ आधार लिया है और इसमें वर्णित ऐतिहासिक उल्लेखों का सार उद्धृत किया है। 17वीं सदी में अकबर के समय में होने वाले हीरविजय सूरि के प्रसिद्ध सहपाठी और अनुगामी विद्वान् महोपाध्याय धर्मसागर गणी ने अपनी सुप्रचलित तपागच्छपट्टावलि और अन्य ग्रन्थों में भी इस ग्रन्थ के कई उल्लेखों का आधार लिया है। इसी तरह 18वीं शताब्दी में बने हुए वस्तुपालरास, कुमारपाल–रास आदि भाषा ग्रन्थों के रचयिताओं ने भी अपनी–अपनी कृतियों में इस ग्रन्थ का बहुत कुछ उपयोग किया है, जिनका विशेष वर्णन करना आवश्यक नहीं है।[5]

इस कथन से ज्ञात होता है कि उस पुरातन समय से ही मेरूतुंग सूरि के इस महत्व के ग्रन्थ की अच्छी ख्याति और उपयोगिता स्थापित हो गई थी।

प्रबन्धचिन्तामणि की वर्तमान में उपयोगिता :– आधुनिक काल के प्रारम्भ में, सबसे पहले क्षेत्र अंग्रेज विद्वान् श्री एलेक्जेंडर किन्लॉक फॉर्ब्स को इसका परिचय हुआ और उन्होंने गुजरात के इतिहास विषय की अपनी सुप्रसिद्ध पुस्तक 'रासमाला' में इसका सर्वप्रथम उपयोग किया। अपने ग्रन्थ में लिखे गये गुजरात के प्राचीन इतिहास का मुख्य ढाँचा

उन्होंने इसी ग्रन्थ पर से तैयार किया। ये अपने ग्रन्थ में, इस ग्रन्थ का पद-पद पर उल्लेख करते हैं और इसमें लिखी गई बातों का संपूर्ण उपयोग करते हैं। उनके पीछे, भारतीय पुरातत्व के प्रखर पण्डित, जर्मन विद्वान्, डॉ. व्युहलर ने इस ग्रन्थ का खूब बारीकी के साथ अध्ययन किया और इसमें वर्णित ऐतिहासिक तथ्यों का सविशेष ऊहापोह किया। 'इन्डियन ऐन्टीक्वेरी' नामक भारतीय-विद्या विषयक सुप्रसिद्ध पत्रिका के सन् 1877 के जुलाई मास के अंक में उन्होंने 'अनहिलवाड के चालुक्यों के 11 दानपत्र' (Eleven land grants of the Chalakyas of Anhilvad) इस शीर्षक से नीचे, अणहिलपुर के राजकीय इतिहास पर प्रकाश डालने वाला एक महत्व का लेख लिखा, जिसमें इस प्रबन्धचिन्तामणि कथित बातों का अच्छा अवलोकन किया, फिर उसके बाद में, डॉ. व्यूहलर ने, जर्मन भाषा में Uber das Leben des Jana mouches Hemacandra इस नाम से, आचार्य हेमचन्द्र का सविस्तार जीवन चरित्र लिखा, जिसमें उन्होंने प्रस्तुत प्रबंधचिन्तामणि का पूरा-पूरा उपयोग किया।[6] इसके बाद, बंबई सरकार ने बॉम्बे गजेटियर के लिये जब गुजरात का प्राचीन इतिहास तैयार करवाया, तो उसके संकलनकर्ता प्रसिद्ध गुजराती पुरातत्वज्ञ डॉ. भगवानलाल इन्द्रजी ने, इस ग्रन्थ का बहुत सूक्ष्मता के साथ सांगोपांग निरीक्षण किया और गुजरात के राजकीय इतिहास के साथ सबन्ध रखने वाली प्रायः सारी ऐतिह्य उक्तियों और श्रुतियों का जो-जो इसमें निर्देश मिलता है उन सबका ठीक-ठीक पर्यालोचन कर, यथायोग्य उनका उपयोग किया। तदुपरान्त, गुजरात के इतिहास विषयक भिन्न-भिन्न प्रकार के पुस्तकों और निबन्धों के रचयिता एतदेशीय और विदेशीय सैंकड़ों ही विद्वानों ने जहाँ-तहाँ इस ग्रन्थ का अनेकशः आधार लिया है और उल्लेख किया है।

सन्दर्भ ग्रंथ :-

1. 'प्रबंध चिंतामणि', पृ. 22
2. उपर्युक्त
3. 'आईने-अकबरी' जिल्द दूसरी, पृ. 216-17
4. मित्तल, ए. सी. (सम्पादन) : दि इन्सक्रिप्शन्स ऑफ इम्पीरियल परमाराज, अहमदाबाद, 1985
5. जिन विजय मुनि (सम्पादन) : श्री मेरूतुगाचार्य विचरित प्रबन्ध चिन्तामणि, अहमदाबाद, 1940
6. उपरोक्त